मुख्य परीक्षा

प्रश्न- स्पष्ट करें कि भारत में सिविल समाज की भूमिका सदैव सकारात्मक नहीं रही है।

(150 शब्द)

The role of Civil Society in India has not been always positive . Explain

(150 Words)

मॉडल उत्तर

- भूमिका में सिविल समाज या नागरिक समाज को बताएँ।
- अगले पैरा में सिविल समाज के सकारात्मक महत्त्व को बताएँ।
- फिर अगले पैरा में सिविल समाज की भूमिका की समीक्षा को बताएँ।
- अंत में संक्षिप्त निष्कर्ष दें।

सिविल समाज की अवधारणा का प्रतिपादन सर्वप्रथम जर्मन वैज्ञानिक हीगल ने किया। उनके अनुसार यह गैर सरकारी समुदाय का प्रतिनिधित्व करता है अर्थात् जो संगठन सरकार से संबंधित नहीं है और परिवार नहीं है। वे सभ्य समाज के अंग हैं बशर्ते उनकी भूमिका सकारात्मक हो। भारत में इसका उदय 1970 के दशक बाद में सरकार के विरोधी घटक के रूप में हुआ। 1990 के दशक के बार इसके दृष्टिकोण में परिवर्तन आया। सरकार ने सामाजिक क्षेत्र की योजनाओं को लागू करने में इतनी सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित करने के लिए राष्ट्रीय नीति निर्मित की है।

नागरिक समाज (Civil Society) का महत्त्व:-

- यह लोगों को शिक्षित व प्रशिक्षित तथा जागरूक बनाते हैं।
- यह शासन में लोगों की भागीदारी सुनिश्चित कराते हैं।
- यह लक्षित समूहों की पहचान कर और उन सभी तक नीतियों का सफल कार्यान्वयन सुनिश्चित करते हैं।
- यह लोगों के हितों के संरक्षण का कार्य करते हैं।
- यह शासन में पारदर्शिता एवं जवाबदेही हेतु सहायक हैं।
- भ्रष्टाचार पर नियंत्रण हेतु सहायक हैं।
- सार्वजनिक संसाधनों के अपव्यय (बर्बादी) को रोकते हैं और गुणवत्ता की वृद्धि में सहायक हैं।

नागरिक समाज (Civil society) की भूमिका की समीक्षा:-

- यदा-कदा इन्होंने समाज में धर्म, जाति आदि के आधार पर कट्टरता को बढ़ाकर भेदभाव व विद्वेष को बढ़ावा दिया है।
- सिविल समाज ने हिंसा का परिचय दिया है और समाज में विघ्न उत्पन्न किया है।
- इन्होंने सार्वजनिक संस्थानों के दुरूपयोग को बढ़ावा दिया है। जैसे 'भारत बंद' आदि
- उपर्युक्त दोष निराकरणीय है। शिक्षण व्यवस्थाओं में मूल्यों का संवर्द्धन कर तथा परिवार की भूमिका में सकारात्मक परिवर्तन कर सिविल समाज की स्थापना की जा सकती है।

अंत में संक्षिप्त तथा सारगर्भित निष्कर्ष दें।